साहित्य और संवाद कौशल

डॉ. ध्रुव कुमार

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मानव ने अपने अस्तित्व में आने के बाद से अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं जिनकी बदौलत ही आज मानव सभ्यता इस मुकाम पर पहुँची है। मानव की तमाम उपलब्धियों के बीच उसकी संप्रेषण या संवाद करने की क्षमता अत्यंत विशिष्ट स्थान रखती है। यद्यपि संवाद का गुण अन्य जंतुओं में भी पाया जाता है किंतु सोच सकने की क्षमता के कारण मानव ने अपने संवाद के स्तर को अन्य जीव–जंतुओं से कहीं ज्यादा ऊँचा उठाया है।

पारिभाषिक रूप से देखें तो संवाद दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच शब्दों का लिखित या मौखिक आदान–प्रदान होता है किंतु संवाद को सिर्फ इस सीमित दृष्टिकोण से देखना उचित नहीं है। संवाद अत्यंत व्यापक शब्द है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों ही तरीकों से हो सकता है जिसकी चर्चा आगे विस्तार से की जाएगी। चूँकि संवादों के माध्यम से ही घटनाक्रम का विकास होता है इसलिए साहित्य में संवाद की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण समझी जाती है। साहित्य में संवाद की भूमिका की चर्चा करने से पहले साहित्य के बारे में समझ लेना आवश्यक है।

साहित्य वही है जो हमारे आस–पास है। एक साहित्यकार अपने आसपास की बातों से कथ्य प्राप्त करते हुए अपनी लेखनी के द्वारा सहृदयता तथा कठोरता के साथ व्यंग्य, कविताओं, रेखाचित्रों और अन्य विधाओं की रचना करता है ताकि समाज इनसे वाकिफ हो सके। साहित्य हमें आगाह करता है कि हम या हमारा समाज कब उन्नति या अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है। साहित्य हमारे सामने एक आदर्श समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह हमें जीवन जीने का सलीका सिखाता है। यह उन बुराइयों पर चोट करता है जो समाज को पतन की ओर ले जाती हैं तथा उन शिष्टता भरे आचरणों, व्यवहारों और कार्यों को बढ़ाने पर जोर देता है जो समाज कल्याण हेतु हितकर हैं। साहित्य चाहे जिस भी भाषा में हो, वह संवादों के माध्यम से तत्कालीन समाज की दशा को शाब्दिक रूप प्रदान करता है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य में संवाद की उत्कृष्टता के उदाहरण भरे पड़े हैं जिनसे पाठक अपने संवाद कौशल को उत्कृष्ट बना सकता है।